



10 June, 2023

ब्लू हाइड्रोजन

संदर्भ : कोयला मंत्रालय ने "ब्लू हाइड्रोजन-ऊर्जा सुरक्षा और हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था" पर संगोष्ठी आयोजित की

- कोयला मंत्रालय के सचिव ने मंत्रालय द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में "नीली हाइड्रोजन-ऊर्जा सुरक्षा और हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था" पर मुख्य भाषण दिया।
- सत्र कोयले से हाइड्रोजन रूपांतरण, लागत प्रतिस्पर्धात्मकता, वैश्विक अनुभवों और आगे की रणनीति के लिए प्रौद्योगिकियों पर चर्चा करने पर केंद्रित था।
- कोयला मंत्रालय ने ग्रीन हाइड्रोजन मिशन का समर्थन करने के लिए कोयला क्षेत्र के लिए कार्रवाई योग्य बिंदुओं की पहचान करने के लिए एक समिति का गठन किया था और इसकी सिफारिशों पर विचार किया जाना चाहिए और एक कार्य योजना को अंतिम रूप दिया जाना चाहिए।
- श्री मीणा, सचिव, ने नियमित रूप से चर्चा करने और गैसीकरण को बढ़ावा देने के लिए विशेषज्ञों के साथ मंत्रालय में एक सलाहकार समिति के गठन का सुझाव दिया।

ब्लू हाइड्रोजन क्या है?

- भाप मीथेन सुधार या कोयला गैसीकरण जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से प्राकृतिक गैस या कोयले से ब्लू हाइड्रोजन का उत्पादन होता है।
- उत्पादन प्रक्रिया हाइड्रोजन गैस और कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂) उत्पन्न करती है।
- कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (CCS) तकनीक का उपयोग करके ब्लू हाइड्रोजन उत्पादन से CO₂ उत्सर्जन को अवशोषित और संग्रहीत या उपयोग किया जाता है।
- ब्लू हाइड्रोजन को कम कार्बन वाली अर्थव्यवस्था के लिए एक संक्रमणकालीन समाधान माना जाता है।
- यह ग्रे या ब्राउन हाइड्रोजन उत्पादन की तुलना में संभावित रूप से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम कर सकता है।

हाइड्रोजन के अन्य कलर कोड रूपा

COLOUR	DESCRIPTION: FEEDSTOCK
Grey	natural gas reforming without CCUS
Brown	brown coal (lignite) as feedstock
Blue	natural gas reforming with CCUS
Green	electrolysis powered through renewable electricity
Pink	electrolysis powered through nuclear energy
Turquoise	methane pyrolysis
Yellow	electrolysis powered through electricity from solar
Orange	electrolysis powered through electricity from wind

हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था

- हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था एक ऊर्जा वाहक के रूप में हाइड्रोजन के व्यापक पैमाने पर उपयोग को संदर्भित करती है।
- जीवाश्म ईंधन (अवशोषण के साथ), नवीकरणीय ऊर्जा और अन्य स्रोतों से उत्पादित होती है।
- परिवहन, उद्योग और बिजली उत्पादन में उपयोग में लाई जाती है।
- उच्च ऊर्जा घनत्व, शून्य उत्सर्जन (नवीकरणीय स्रोतों से) और बहुमुखी प्रतिभा प्रदान करता है।
- इसका उद्देश्य जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना और उत्सर्जन कम करना है।
- चुनौतियों में लागत, बुनियादी ढांचा और रसद शामिल हैं।
- हाइड्रोजन प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देने वाले वैश्विक निवेश की आवश्यकता बहुत अधिक है।

राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन

- भारत का लक्ष्य 2047 तक ऊर्जा स्वतंत्रता और 2070 तक शून्य उत्सर्जन हासिल करना है।
- नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना भारत के ऊर्जा परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण है।
- इस बदलाव के लिए ग्रीन हाइड्रोजन को एक आशाजनक समाधान के रूप में देखा जाता है।
- इसका उपयोग लंबी अवधि के ऊर्जा भंडारण, जीवाश्म ईंधन की जगह, स्वच्छ परिवहन, विकेंद्रीकृत बिजली उत्पादन, विमानन और समुद्री परिवहन के लिए किया जा सकता है।
- भारत को विश्व स्तर पर ग्रीन हाइड्रोजन का प्रमुख उत्पादक और आपूर्तिकर्ता बनाने के लिए राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन को मंजूरी दी गई थी।
- उद्देश्यों में आयातित जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना, स्वदेशी विनिर्माण क्षमता विकसित करना, निवेश आकर्षित करना और रोजगार के अवसर पैदा करना शामिल है।
- 2030 तक, मिशन का लक्ष्य प्रति वर्ष 5 MMT की हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता विकसित करना और 125 GW नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को जोड़ना है।
- यह निवेश में 8 लाख करोड़ रुपये से अधिक का लक्ष्य रखता है, 6 लाख से अधिक नौकरियों का सृजन करता है, जीवाश्म ईंधन के आयात में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक की कमी करता है, और सालाना लगभग 50 MMT ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करता है।

Face to Face Centres





10 June, 2023

राज्यपाल की विवेकाधीन शक्तियाँ

संदर्भ: तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने शुक्रवार को संकेत दिया कि राज्य सरकार राज्यपाल आर.एन. रवि के खिलाफ विधेयकों पर सहमति रोके जाने के खिलाफ अदालत का रुख कर सकती है।

विवेकाधीन शक्तियाँ

भारत के राष्ट्रपति के विपरीत, राज्य के राज्यपाल को अपने विवेक से कार्य करने की शक्ति प्रदान की जाती है। राज्यपाल के लिए विवेकाधिकार की दो श्रेणियाँ हैं। एक है **संवैधानिक विवेक** और दूसरा है **परिस्थितिजन्य विवेक**।

संवैधानिक विवेक

- राष्ट्रपति के विचारार्थ विधेयक का आरक्षण। (अनुच्छेद 200)
- राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने की सिफारिश। (अनुच्छेद 356)
- पड़ोसी केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासक के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए (अतिरिक्त प्रभार के मामले में)।
- असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम की सरकारों द्वारा खनिज अन्वेषण लाइसेंस से रॉयल्टी के रूप में एक स्वायत्त जनजातीय जिला परिषद को देय राशि का निर्धारण। (अनुसूची 6)
- राज्य के प्रशासनिक और विधायी मामलों के बारे में मुख्यमंत्री से जानकारी प्राप्त करना।

स्थितिजन्य विवेक

- मुख्यमंत्री की नियुक्ति जब राज्य विधान सभा में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं है या जब वर्तमान मुख्यमंत्री की अप्रत्याशित रूप से मृत्यु हो जाती है और कोई स्पष्ट उत्तराधिकारी नहीं होता है।
- राज्य विधान सभा के विश्वास को प्रदर्शित करने में असमर्थ होने पर मंत्रिपरिषद की बर्खास्तगी।
- राज्य विधान सभा की बर्खास्तगी जब मंत्रिपरिषद अपना बहुमत खो देती है।
- इसके अलावा, राज्यपाल पर विशिष्ट कर्तव्यों का आरोप लगाया जाता है जिसे राष्ट्रपति के निर्देशों के अनुसार किया जाना चाहिए। इस संबंध में, राज्यपाल, जबकि मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद से परामर्श करने की आवश्यकता होती है, अपने विवेक से कार्य करता है। ये:
 - महाराष्ट्र - विदर्भ और मराठवाड़ा के लिए अलग-अलग विकास बोर्डों का गठन।
 - गुजरात - सौराष्ट्र और कच्छ के लिए अलग-अलग विकास बोर्डों का गठन।
 - नागालैंड- राज्य में कानून व्यवस्था की दृष्टि से, जब तक नागा हिल्स- तुएनसांग क्षेत्र में आंतरिक संघर्ष बना रहता है।
 - असम-आदिवासी क्षेत्र प्रशासन के संबंध में।
 - मणिपुर- राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में।
 - सिक्किम-शांति और आबादी के सभी वर्गों की सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए।
 - अरुणाचल प्रदेश- राज्य की कानून व्यवस्था के संदर्भ में।
 - कर्नाटक - हैदराबाद-कर्नाटक क्षेत्र के लिए एक अलग विकास बोर्ड का निर्माण।
 - यदि कोई प्रश्न उठता है कि कोई कार्यवाही राज्यपाल के विवेकाधीन है या नहीं, तो राज्यपाल का निर्णय अंतिम होता है और उस पर प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता।

राष्ट्रपति की विवेकाधीन शक्तियाँ

- राष्ट्रपति के पास संविधान में उल्लिखित कोई विवेकाधीन शक्तियाँ नहीं हैं, और वह मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करता है।
- **स्थितिजन्य विवेक**
 - त्रिशंकु संसद के दौरान प्रधानमंत्री की नियुक्ति
 - किसी विधेयक के विरुद्ध वीटो शक्तियाँ
 - लोकसभा का विघटन जब सत्तारूढ़ दल बहुमत खो देता है
 - प्रधानमंत्री से जानकारी मांगी

एल नीनो और भारतीय मानसून

संदर्भ: जैसे ही मानसून केरल तट से टकराया, यूएस नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (NOAA) ने घोषणा की कि भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर एल नीनो में मजबूती में मजबूती देखी जा रही थी।

- यूएस नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (NOAA) ने भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर को एल नीनो चरण में घोषित किया है।
- अल नीनो भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के पानी के असामान्य रूप से गर्म होने को संदर्भित करता है, जो वैश्विक स्तर पर मौसम की घटनाओं को प्रभावित करता है।
- एल नीनो भारत में मानसून के मौसम के दौरान वर्षा को कम कर देता है।
- एल नीनो दुनिया भर के विभिन्न स्थानों में भारी वर्षा और सूखे का कारण बन सकता है।

Face to Face Centres





10 June, 2023

- वर्तमान अल नीनो घटना 2000 के बाद से पांचवीं घटना है।
- अल नीनो और ला नीना, अल नीनो सर्दर ऑसिलेशन (ENSO) प्रणाली में वैकल्पिक चरण हैं।
- अल नीनो घटना की भीषणता में अचानक वृद्धि उम्मीदों से अधिक हो गई है।
- अल नीनो भारत में सूखे के वर्षों से जुड़ा हुआ है, पिछली शताब्दी में सूखे के 18 वर्षों में से 13 को अल नीनो से जोड़ा गया है।
- अल नीनो के दौरान, व्यापारिक पवनें कमजोर हो जाती हैं और भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर के साथ गर्म समुद्री सतह का तापमान बढ़ जाता है।
- 1951 और 2021 के बीच अल नीनो के वर्षों में भारत में कम वर्षा के साथ नौ ग्रीष्मकालीन मानसून मौसम देखे गए।

अल नीनो क्या है?

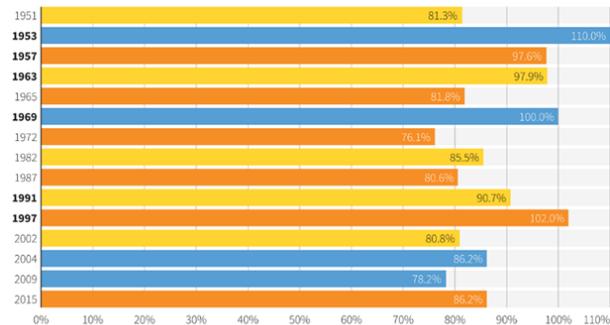
- अल नीनो भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के पानी के असामान्य रूप से गर्म होने को संदर्भित करता है।
- यह विश्व स्तर पर मौसम के स्वरूप को प्रभावित करता है।
- यह दुनिया भर के विभिन्न स्थानों में भारी वर्षा और सूखे के जोखिम को बढ़ा सकता है।
- एल नीनो सर्दर ऑसिलेशन (ENSO) प्रणाली के हिस्से के रूप में अल नीनो की घटनाएं हर दो से सात साल में होती हैं।
- यह ला नीना के रूप में जाने वाले ठंडे चरण के साथ वैकल्पिक होता है।
- एल नीनो की घटनाओं का कृषि, जल संसाधनों और पारिस्थितिक तंत्र पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।
- अल नीनो समुद्री पारिस्थितिक तंत्र को बाधित कर सकता है, मत्स्य पालन और समुद्री जीवन को प्रभावित कर सकता है।
- यह वैश्विक जलवायु स्वरूप को भी प्रभावित कर सकता है, जिससे तापमान और वर्षा वितरण में परिवर्तन हो सकता है।
- **एल नीनो का निर्माण:**

- भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर की स्थितियों में बदलाव के कारण अल नीनो बनता है।
- कमजोर व्यापारिक हवाएं सामान्य समुद्री संचलन स्वरूप को बाधित करती हैं।
- दक्षिण अमेरिका के पास गर्म सतही जल का जमाव हो जाता है।
- इससे मध्य और पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में समुद्र की सतह का तापमान बढ़ जाता है।
- अल नीनो की घटनाएं शरद ऋतु के अंत या सर्दियों में चरम पर होती हैं और महीनों से लेकर एक साल तक रह सकती हैं।
- निगरानी संकेतक एल नीनो के विकास की भविष्यवाणी और ट्रैक करने में मदद करते हैं।
- एल नीनो वर्षा, तापमान और वायुमंडलीय परिसंचरण को प्रभावित करते हुए वैश्विक मौसम पैटर्न को प्रभावित करता है।

Correlation between El Nino and Indian monsoon rains

Rainfall departure between June to September.

● Weak El Nino ● Moderate El Nino ● Strong El Nino



Source: Indian Meteorological Department

भारतीय मानसून पर प्रभाव

- अल नीनो प्रशांत महासागर में गर्म समुद्र के तापमान की ओर जाता है।
- यह वायुमंडलीय स्वरूप में परिवर्तन का कारण बनता है।
- अल नीनो वर्षों के दौरान भारतीय मानसून कमजोर हो जाता है।
- अल नीनो और मानसून वर्षा के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।
- कुछ एल नीनो वर्षों में भारत ने सामान्य या सामान्य से अधिक वर्षा का अनुभव किया है।
- हालांकि, हाल के अल नीनो वर्षों में भारत में सूखे की स्थिति और औसत से कम वर्षा देखी गई है।

Face to Face Centres





NEWS IN BETWEEN THE LINES

सामरिक परमाणु हथियार



संदर्भ: हाल ही में, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने 7-8 जुलाई को विशेष भंडारण सुविधाओं के पूरा होने के बाद बेलारूस में सामरिक परमाणु हथियार तैनात करने की योजना की घोषणा की है।

सामरिक परमाणु हथियार क्या है?

सामरिक परमाणु हथियार, जिसे गैर-रणनीतिक परमाणु हथियार भी कहा जाता है। यह युद्ध के मैदान में विशिष्ट सैन्य स्थितियों में या दुश्मन की सेना के निकट निकटता में उपयोग के लिए डिज़ाइन किए गए परमाणु हथियारों की एक श्रेणी है।

आकार और सीमा:

ये हथियार आम तौर पर उपज में छोटे होते हैं और रणनीतिक परमाणु हथियारों की तुलना में कम रेंज वाले होते हैं जो लंबी दूरी की डिलीवरी के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं और आमतौर पर अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल (आईसीबीएम) और रणनीतिक बमवर्षक से जुड़े होते हैं।

उद्देश्य:

सामरिक परमाणु हथियारों का प्राथमिक उद्देश्य प्रतिरोध, वृद्धि नियंत्रण और युद्धक्षेत्र श्रेष्ठता सहित विभिन्न प्रकार के सैन्य विकल्प प्रदान करना है।

प्रॉक्सी युद्ध चिंताएं:

राष्ट्रपति पुतिन यूक्रेन में संघर्ष को पश्चिम द्वारा एक विस्तारवादी कदम के रूप में देखते हैं, संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके सहयोगी कथित रूप से यूक्रेन को हथियारों की आपूर्ति करते हैं।

नाटो की प्रतिक्रिया:

नाटो देशों ने यूक्रेन के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया है और रूसी आक्रमण के रूप में जो वे देखते हैं, उसके खिलाफ अपनी रक्षा में सहायता करने को प्रतिबद्ध है। यूक्रेन में चल रहे संघर्ष को नाटो द्वारा यूक्रेनी राज्य के अस्तित्व की लड़ाई के रूप में देखा जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय निहितार्थ:

बेलारूस में परमाणु हथियार तैनात करने के फैसले ने वैश्विक स्तर पर चिंताएं बढ़ा दी हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके नाटो सहयोगी स्थिति की बारीकी से निगरानी कर रहे हैं, क्योंकि इस कदम से यूरोप में क्षेत्रीय स्थिरता और शक्ति संतुलन के लिए संभावित परिणाम हो सकते हैं।

हर घर जल कार्यक्रम



संदर्भ: हाल ही में, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट ने सार्वजनिक स्वास्थ्य पर भारत के 'हर घर जल' कार्यक्रम के महत्वपूर्ण प्रभाव पर प्रकाश डाला, जिसमें दस्त से होने वाली मौतों की रोकथाम और 101 बिलियन डॉलर तक की अनुमानित लागत बचत शामिल है।

हर घर जल कार्यक्रम:

"हर घर जल" (हर घर को पानी) कार्यक्रम जल शक्ति मंत्रालय के तहत शुरू की गई भारत सरकार की एक पहल है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वर्ष 2024 तक भारत के प्रत्येक ग्रामीण परिवार को पाइप से जलापूर्ति प्रदान करना है। इस कार्यक्रम की घोषणा 15 अगस्त, 2019 को भारत के प्रधान मंत्री (नरेंद्र मोदी) द्वारा की गई थी।

उद्देश्य:

हर घर जल कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य पानी की कमी को खत्म करना, स्वच्छ पेयजल तक पहुंच बढ़ाना, जल जनित बीमारियों को कम करना और ग्रामीण समुदायों में जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार करना है। यह जल जीवन मिशन नामक बड़ी सरकारी पहल का हिस्सा है।

एसडीजी 6.1 के साथ संरेखण:

कार्यक्रम सतत विकास लक्ष्य (SDG) 6.1 पर प्रगति की निगरानी के लिए जल आपूर्ति, स्वच्छता और स्वच्छता (JMP) के लिए WHO/UNICEF संयुक्त निगरानी कार्यक्रम के साथ संरेखित करता है, जो सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल सेवाओं पर केंद्रित है।

स्वास्थ्य प्रभाव:

रिपोर्ट का अनुमान है कि भारत में सभी घरों के लिए सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल सुनिश्चित करने से दस्त से होने वाली लगभग 400,000 मौतों को रोका जा सकता है और इन बीमारियों से संबंधित लगभग 14 मिलियन विकलांगता समायोजित जीवन वर्ष (डीएलवाई) को रोका जा सकता है।

लागत बचत:

सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने की उपलब्धि से अनुमानित लागत में 101 अरब डॉलर तक की बचत होगी

'सागर समृद्धि'



संदर्भ: हाल ही में, केंद्रीय मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के लिए एक ऑनलाइन ड्रैजिंग निगरानी प्रणाली 'सागर समृद्धि' लॉन्च की है।

क्या है 'सागर समृद्धि'?

यह बंदरगाहों, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय के तहत बंदरगाहों, जलमार्गों और तटों के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी केंद्र (NTCPWC) द्वारा विकसित एक ऑनलाइन ड्रैजिंग निगरानी प्रणाली है।

उद्देश्य:

सागर समृद्धि कार्यक्रम का उद्देश्य उत्पादकता, अनुबंध प्रबंधन और ड्रेज्ड सामग्री का प्रभावी पुनः उपयोग करना है, जो कचरे से धन की अवधारणा के साथ संरेखित है।

समारोह:

कार्यक्रम समग्र प्रणाली में ड्रैजिंग लागत को कम करेगा, पारदर्शिता बढ़ाएगा और दक्षता बढ़ाएगा।

सागरमाला कार्यक्रम के तहत स्थापित एनटीसीपीडब्ल्यूसी (बंदरगाहों, जलमार्गों और तटों के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी केंद्र), समुद्री क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के लिए जिम्मेदार है, जो बंदरगाह, तटीय और जलमार्ग संबंधी चुनौतियों के लिए समाधान पेश करता है।





10 June, 2023

ओमान की खाड़ी



संदर्भ: हाल ही में, भारत, फ्रांस और संयुक्त अरब अमीरात (UAE) की नौसेनाओं ने ओमान की खाड़ी में अपना पहला त्रिपक्षीय समुद्री साझेदारी अभ्यास किया।

ओमान की खाड़ी:

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और शिपिंग मार्गों के संदर्भ में ओमान की खाड़ी का बहुत महत्व है क्योंकि यह फारस की खाड़ी से दुनिया के बाकी हिस्सों में तेल और प्राकृतिक गैस के परिवहन के लिए एक महत्वपूर्ण समुद्री गलियारा है। होर्मुज जलडमरूमध्य ओमान की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ता है।

जगह/स्थिति:

ओमान की खाड़ी अरब सागर के उत्तरपूर्वी भाग में स्थित है।

सीमावर्ती देश:

ओमान की खाड़ी की सीमा वाले देश उत्तर में ईरान और पूर्व में पाकिस्तान हैं।

प्रमुख बंदरगाह:

ओमान की खाड़ी के किनारे स्थित कुछ प्रमुख बंदरगाहों में ईरान में चाबहार पोर्ट, ओमान में पोर्ट सुल्तान कबूस और पाकिस्तान में ग्वादर पोर्ट शामिल हैं।

क्षेत्रीय विवाद:

ओमान की खाड़ी से संबंधित क्षेत्रीय विवाद या संघर्ष मुख्य रूप से अबू मूसा, ग्रेटर टुनब और लेसर टुनब सहित कुछ द्वीपों पर संप्रभुता के संबंध में ईरान और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को शामिल करते हैं।

प्राकृतिक संसाधन:

ओमान की खाड़ी में पाए जाने वाले प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों में तेल, प्राकृतिक गैस और मछली शामिल हैं।

पर्यावरणीय महत्व:

ओमान की खाड़ी का पर्यावरणीय महत्व है क्योंकि यह विविध समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों का समर्थन करती है और विभिन्न समुद्री प्रजातियों का घर है।

हालांकि, यह प्रदूषण, अत्यधिक मछली पकड़ने, निवास स्थान के विनाश और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों जैसी चुनौतियों का सामना करता है।

मेकेदातु बांध परियोजना



संदर्भ: हाल ही में, कावेरी जल प्रबंधन प्राधिकरण 16 जून को नई दिल्ली में एक बैठक आयोजित करने वाला है। हालांकि, ऐसा प्रतीत होता है कि अत्यधिक विवादास्पद मेकेदातु बांध परियोजना चर्चा का विषय नहीं होगी।

मेकेदातु बांध परियोजना:

उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य कावेरी नदी पर एक बांध और जलाशय का निर्माण करना है ताकि बेंगलुरु को पीने के पानी की आपूर्ति की जा सके और भूजल की भरपाई की जा सके। इससे 400 मेगावाट बिजली पैदा करने का भी लक्ष्य है।

स्वीकृति: कर्नाटक सरकार ने वर्ष 2017 में परियोजना को मंजूरी दी थी।

दुसरे उद्देश्य: परियोजना का उद्देश्य भारत के तेजी से बढ़ते शहरों में से एक, बेंगलुरु की पानी की जरूरतों को पूरा करना और क्षेत्र में बिजली उत्पादन को बढ़ाना है।

कावेरी नदी:

महत्व: यह दक्षिणी भारत की तीसरी सबसे बड़ी नदी है और तमिलनाडु की सबसे बड़ी नदी है, जिसे तमिल में 'पोन्नी' के नाम से जाना जाता है।

उत्पत्ति: कावेरी नदी कर्नाटक में उत्पन्न होती है, विशेष रूप से कोडागु जिले में पश्चिमी घाट के ब्रह्मगिरी रेंज में स्थित तलकावेरी में।

प्रवाह: यह तमिलनाडु से होकर बहती है और पांडिचेरी से होकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

सहायक नदियाँ: इसकी कुछ सहायक नदियों में हंरंगी, हेमवती, काबिनी, भवानी, लक्ष्मण तीर्थ, नोय्याल और अर्कावती शामिल हैं।

तमिलनाडु का मेकेदातु का विरोध:

तमिलनाडु ने लगातार मेकेदातु बांध परियोजना का विरोध किया है और इसकी योजना को कावेरी जल विवाद ट्रिब्यूनल के 5 फरवरी, 2007 के फैसले का उल्लंघन मानता है, जिसे बाद में 16 फरवरी, 2018 को सुप्रीम कोर्ट ने पुष्टि की थी।

